

श्री

व श्रुती स्यात् अनन्ता ययान् सर्वत्र सवर्गः व श्रुतं का व श्रुतं धन धान्य व श्रुतिः
का वि श्रुति भाष्यार्थे सभा दनिष्ठः कृष्ण कर व काष्ठां ग वंदा ह निव र स्यात् मरु मय
ह वानि ग वृद्ध वृद्ध सत्य धर्म सत्य संघ सत्य सर्व वाधिसत्य भाधिया गृह सत्य स
वृद्धा व क यत्न क वृद्ध सत्य वृद्ध सत्य विद्ध सत्य वृद्ध सत्य लोक याल स धन द स म
ज्ञा क वि श्रुति सत्य सवर्ग सति मरुति वृद्ध वृद्धा सत्ता य वा उ जा ग वृद्ध ज ग म

व
यत्र यम आसा सति या ग र उ या कलि जय वनि ॥ रग वनि समय म न्या लय सर्व न
था ग र द्ध द य धु धा व वला क य मा स पति वा व सर्व सत्ता ना व अ म हा द वृ नार य
का य वि य व य कृ ग ज सा म हा रु य स स व र य स व र स व व र ना वि सा धा नि
म द ल वि धु धा वि ग न र वि ग म व र सर्व म ग र वि सा धा नि सर्व म ग र
व र स ग र वि सा धा नि धी नि र सर्व या या वि धु धा म ल वि ग न जय वनि

सर्वलोकाधिपतिस्वाहा सर्वकथागमसमयादिनिर्दिष्टस्वाहा सर्वकथा
प्रीत्यालेख्यस्वाहा सर्वकथागमद्वयधिरिक्तास्वाहा सर्वद्वयकारिणि
कस्वस्वाहा सर्वकथागमसमयादिनिर्दिष्टस्वाहा सर्वद्वयकारिणि
स्वाहा सर्वकथागमसमयादिनिर्दिष्टस्वाहा सर्वद्वयकारिणि
स्वाहा सर्वकथागमसमयादिनिर्दिष्टस्वाहा सर्वद्वयकारिणि
स्वाहा सर्वकथागमसमयादिनिर्दिष्टस्वाहा सर्वद्वयकारिणि

माहा

कायस्वाहा विष्णुस्वाहा वेसमनायस्वाहा वरुणमहा राजानमकुमारस्वाहा
मातायस्वाहा जस्यजिनायस्वाहा वरुणायस्वाहा मन्त्रकायस्वाहा महा मन्त्रकाय
स्वाहा अग्निस्वाहा वायुस्वाहा नागविलासस्वाहा दक्षस्वाहा नाग
राजस्वाहा राजाक्षसगनस्वाहा गर्गस्वाहा अरुण
गन्धर्वगनस्वाहा किन्नरगनस्वाहा महाजगन्नाथस्वाहा

स्वाहा ॥ असन्न्यागनेत्यस्वाहा ॥ सर्वगुरोस्वाहा ॥ सर्वधर्मस्वा
 मांस्वाहा ॥ सर्वयक्ष्मास्वाहा ॥ सर्वबाह्यस्वाहा ॥ सर्वयजन
 सर्वकर्मयुक्तस्वाहा ॥ सर्वद्वयद्वयस्वाहा ॥ उं ध्रुवस्वाहा ॥ उं तु
 स्वाहा ॥ उं क्रुवस्वाहा ॥ उं चक्रस्वाहा ॥ उं मन्त्रस्वाहा ॥ उं हन
 रस्वस्वाहा ॥ उं दहस्वस्वाहा ॥ उं यवस्वस्वाहा ॥ उं यवस्वस्वाहा ॥ उं यवस्वस्वाहा ॥

[illegible]

ॐ कलि साहस ॥ ॐ वा ध नि सा ह ॥ ॐ ना ज नि सा ह ॥ म वि सा ह ॥ न म वि सा ह ॥ व
ग व नि सा ह ॥ स र्व न थ ग न म रू य व न वि ग न रु य स म य ॥ ध रू ग व नि स र्व या
य स वि ह वं रु म स र्व स त्वा ना च स्वा ह ॥ ॐ म नि र वि म नि धा वि र वि च व न ह
ग व नि रु य वि ग रु य ह व नि गो धि र वा ध य व ह नि य स र्व न थ ग न रु द य सा ह
॥ म नि र वि म नि र वि र व रु मा स र्व स त्वा ना च स र्व न थ ग न ४ स र्व वि द्या वि दि

ॐ

व रू नि रू ठ नि ग य नि गा य नि प र नि या व नि रू क नि कालि क जालि म द नि
मा दि नि क रु म क लि म क लि सा क लि स क वि क रू य लि स व लि ठ व नि इ म इ
रू नि रू रु स म म रा या वे जा या ॥ य लि वे जा या व रू रु द व स म न न रू लि
कि सि स्वा हा ॥ ॐ न मा व ध य ४ न मा ह मा य न मा स द्या य ४ न मा सा हा मा य
वि द्या जा मि मा क य थ ॥ ह ह ह ह ह न ग व व व ४ इ म व व ल ४ रु ज य २ ४ वि ज

۱۱

[illegible][illegible]

कृदागमिना स्वाहा साकायना नो स्वाहा समागताना स्वाहा समकर्मिना स्वाहा
 वृक्षेन स्वाहा वृक्षेनाय स्वाहा यज्ञाय नमः स्वाहा वृक्षेनाय स्वाहा वायु
 स्वाहा अग्निय स्वाहा वज्रनाय स्वाहा इमाय स्वाहा इमर्थे जगत्स्वाहा उदयदाय
 स्वाहा वसनाय स्वाहा वसन्तनाय स्वाहा धृष्टवाकाय स्वाहा वि
 ब्रह्मकाय स्वाहा विब्रह्मकाय स्वाहा विब्रह्मकाय स्वाहा विब्रह्मकाय स्वाहा वि

१३

५

समायुचिनाम धावनि
 नमारुगवत्प्राचार्यम
 त्वाहवत्मानि महा
 महाविद्यामय यदानि
 च नरुपि रिशु नारिशु

समाय ॥ ॥
 सासिगवर्गि ॥ इगद्र
 सिगवर्गिनाम धावनि
 एगममय द्वावकाव
 निनामया सकानाम

की

यामिका नादिद्यवासाय मथयदिनाय हुषाय हविष्यानि ॥ न द्याथा ॥ अ
 गारुजगाय जगसा सदगमसा सनजगम, उवाभवायकविवा, रुजविवा
 जशविवाकच ववा, ॐ डा ॐ दुकि सजा साहसकि स जा ॐ वमकि विजमनि
 वझमकि, सर्वयसाधनि, पुमथसाधनि, अयनिहन, ॐ ए वाडा, डामवाडा, व
 वनावाडा, मनसि वाडा, वाहुकि वाडा, डमर्दगि वाडा, वझसहायनि वाडा

ॐ

धिपकिनाजा, दुद्धरुगवान्धमसासिजाडा॥ अन्नक, आ, ला, कान्कयकमि
माभायामहायक॥ मूत्रक॥ मूत्रक॥ मूत्रक॥ मूत्रक॥ मूत्रक॥ विद्याकिथकि॥ निगमक
निगमक, निगमक, निगमक॥ कियुयवायकि॥ उश्वाकुवहुगुपिंयलिनान
यलिगुरुंयविद्याउन, साकि, धनियन, दंदयविहारां, सहयविहारां, विस्व
यवनासन, विस्वनाशन, सिमावध, दुनिवध, चक्रवर्तु, जिवरु, वरसुनयभ

मसिधासिधासिधयदाकर्मलब्ध
जुष्टिनिजमहाजगदिष्टिनी
यस्यसुखानांविश्वमहासुखं
शाश्वतमहासिद्धिनिदधयः
॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

देवनागजकुण्डलुवहृदयग
 नसर्वदिनगुनयविवेकनर
 श्वसक्यामसर्वसुखान्तदयादा
 निवृत्तुयार्थधननिसमायना
 महासगुनसाधनि। तनुः

ॐ

गुणीयामयि सविनिवधनि आतादिनि तुलादिनि पुल्लभलनिलि मल्ल
निल्ल इमल्ल नि विर विर वधवयल ह जल्ल भामा मयि का ज कालिक
कजालि महाकालि एक क सनि क जल्ल जल्ल जल्ल जल्ल जल्ल जल्ल जल्ल
इम धात्र स्वादमद म्वा म्वाया वजाया यजि वजाया दिति दिति दिति दिति
दिति दिति दिति दिति दिति दिति १० निलि निलि निलि निलि निलि निलि

२३ नभारुगवका आर्या
राम नरुं डि वनिद विरुस
गि साहासाय विपन मामि
दुसाय नभारुं द्याया न
लिहि डि मि डि नी ॥ आ ६६

II-314-6

धर्मरत्न बजाचाय सुरत श्री महाविहार

माहासाय विविद्या मि
सुत निवा न निविद्या
दं नभारु धाय नभारु
दधारा नु डि वि डि कि
७ इग ७७ दलि नि वं

२०